1

हक़ दो

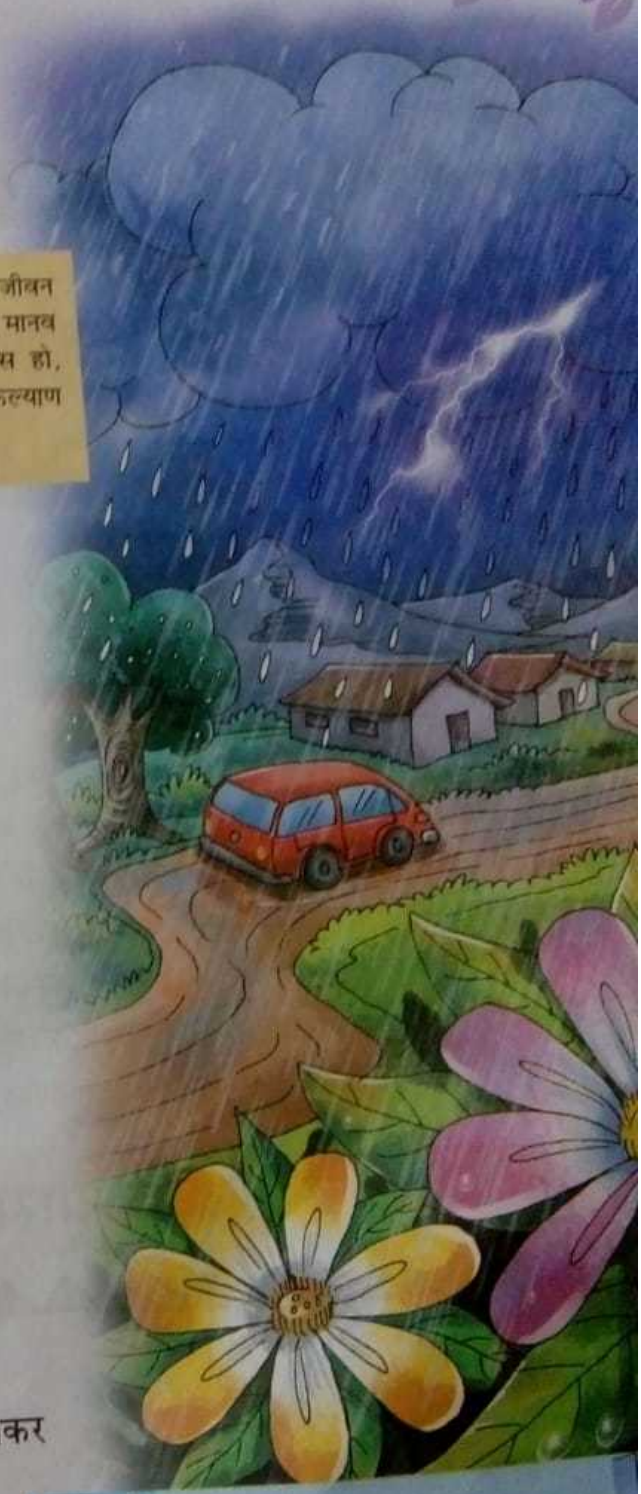

पाठ-प्रवेश

सबको अपनी ज़िंदगी जीने का अधिकार है। किसी के जीवन में बाधा बनना अनुचित है। प्रकृति के विभिन्न अंगों से मानव अनुचित छेड़छाड़ न करे ताकि उनका स्वाभाविक विकास हो, आवागमन हो, स्वतंत्रता हो और संपूर्ण प्रकृति मानव के कल्याण के लिए पताका स्वरूप बनी रहे।

फूल को हक़[1] दो, वह हवा को प्यार करे,
ओस, धूप, रंगों से जितना भर सके भरे,
सिहरे, काँपे, उभरे,
नए फूलों के लिए!

गंध को हक़ दो वह उड़े, बहे, घिरे, झरे,
मिट जाए, नई गंध के लिए!

बादल को हक़ दो, वह हर नन्हे पौधे को
छाँह दे, दुलारे,
फिर रेशे-रेशे[2] में हलकी सुरधनु[3] की
पत्तियाँ लगा दे,
फिर कहीं भी, कहीं भी, गिरे, बरसे, घहरे[4],
टूटे, चुक जाए–
नए बादल के लिए!

डगर को हक़ दो, वह, कहीं भी, कभी भी,
किसी वन, पर्वत, खेत, गली-गाँव-चौहटे[5] जाकर
सौंप दे थकन अपनी, बाँहें अपनी
नई डगर के लिए!

शब्दार्थ

1. अधिकार; 2. एक-एक कण; 3. इंद्रधनुष; 4. सहसा आ पहुँचना; 5. चौराहे

लहर को हक़ दो, वह कभी संग पुरवा[6] के,
कभी साथ पछुवा[7] के
इस तट पर भी आए, उस तट पर भी जाए
और किसी रेती पर सिर रख सो जाए
नई लहर के लिए!

माटी को हक़ दो, वह भीजे[8], सरसे, फूटे,
अँखुआए[9]
इन मेड़ों[10] से लेकर, उन मेड़ों तक छाए
और कभी न हारे,
यदि हारे
तब भी उसके माथे पर हिले,
और हिले
और उठती ही जाए
यह दूब[11] की पताका[12]
नए मानव के लिए!

–केदारनाथ सिंह

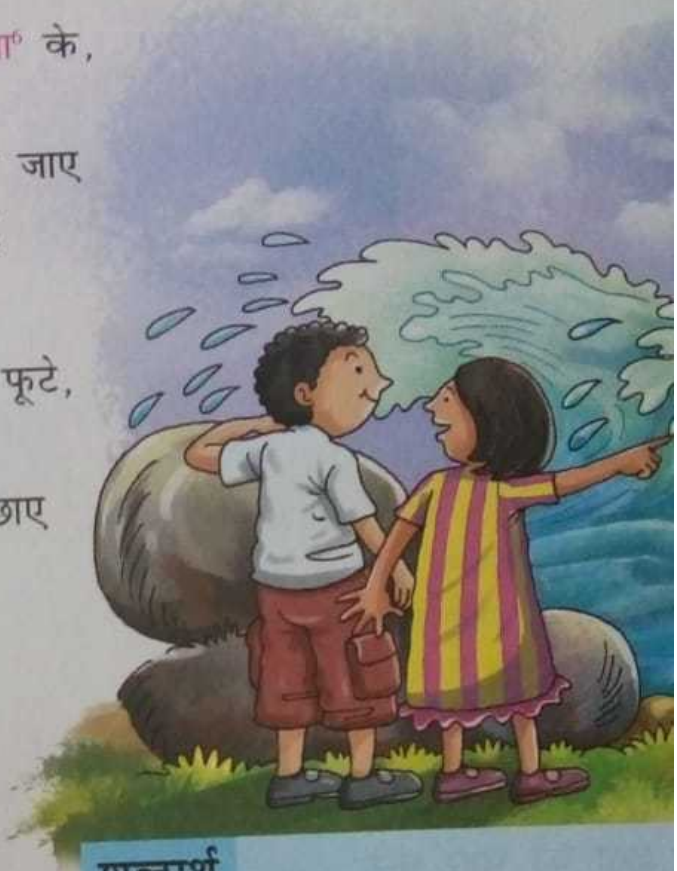

शब्दार्थ

6. पूर्व से आने वाली हवा; 7. पश्चि
8. भीगे; 9. अंकुर निकलना; 10. खेत
बनाया हुआ घेरा; 11. घास, तिनके; 12

कवि-परिचय

केदारनाथ सिंह– केदारनाथ सिंह का जन्म 7 जुलाई 19
बलिया जिले के चकिया गाँव में हुआ था। उन्होंने काशी
ई० में हिंदी में एम०ए० और 1964 में हिंदी में पी-एच०डी०
प्रमुख कृतियाँ- अभी बिल्कुल अभी, ज़मीन पक रही है, य
बाघ, सृष्टि पर पहरा, तालस्ताय और साइकिल आदि काफी प्रसिद्ध हैं। 19
सारस' के लिए उनको साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया था। इसके अ
सम्मान, भारत-भारती सम्मान, दिनकर सम्मान तथा ज्ञानपीठ पुरस्कार से स

Class - 8

Expt. No. पाठ - 1 Date

हक दो

Page No. 1

कवि - श्री केदारनाथ सिंह जी है

शब्दार्थ -

हक - अधिकार

रेशे - रेशे - एक - एक कण

सुरधनु - इंद्र धनुष

धहरे - सहसा आ पहुँचना

चौहटे - चौराहे

पुरवा - पूर्व से आने वाली हवा

पछुवा - पश्चिम से आने वाली हवा

भींचे - भीगे

अँखुआए - अंकुर निकलना

मेड़ों - खेत के आस - पास मिट्टी का बनाया हुआ घेरा

दूब - घास, तिनके

पताका - ध्वज

1 फूल को हक - - - - - - - - - बादल के लिए!
सन्दर्भ - यह पंक्तियाँ हमारी पाठ्य-पुस्तक के पाठ-1 'हक दो' कविता से ली गई है। इसके कवि श्री केदारनाथ सिंह जी है।
प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि ने प्रकृति से छेड़छाड़ ना करने व उन्हे भी अपना हक देने की बात कर रहे है।
अर्थ - कवि केदारनाथ जी कहते है कि सभी प्राकृतिक सम्पदाओ को हक दो. फूल को हक दो कि वह पवन के साथ झूमें, गाए, ओस, धूप, रंगो को अपने अंदर भर सके नए फूलो के लिए! गंध (महक) को हक दो कि वह बहे, महके, मिट जाए नई गंध के लिए! बादल को हक दो वह पेड़-पौधो को छाया दे, प्यार करे। प्रकृति के कण-कण में इंद्रधनुष के रंगों को भर दे। कहीं जाए, कहीं गरजे बरसे, गिरे नए बादल के लिए। इसी तरह प्रकृति खुश रहे अपनी हरियाली के साथ।

2 डगर को - - - - - - - - - - - लहर के लिए!
सन्दर्भ -
प्रसंग -
अर्थ - इन पंक्तियो के माध्यम से कवि कहते है डगर को हक दो कि वह वन, पर्वत, खेत, गली-गाँव, चौराहे आदि से मार्ग बनाते हुए आगे जाए, और अपनी थकान को नई डगर को दे। लहर को हक दो कि वह पूर्व-पश्चिम से आने वाली हवा के साथ इस किनारे से उस किनारे तक जा सके। रेत के साथ खेल सके, तथा वही रुक जाए नई लहर के लिए। इसी खुशी के साथ अपना अस्तित्व बनाएँ रखें।

Teacher's Signature :

(3) माटी को हक - - - - - - - - - मानव के लिए!

सन्दर्भ

प्रसंग

अर्थ- मिट्टी को हक दो कि वह भीगे, खिले और अपने गुणों के साथ बीजों को अंकुरित करें। खेत के आस-पास बने मिट्टी के घेरे में यहा से वहाँ फसलों के साथ खेले। अपनी उपजाऊ क्षमता को कभी न खोये यदि उपजाऊ के गुण कम भी हो तो वह बंजर नही बन सकती। उसके माथे पर घास, तिनके का ध्वज हमेशा लहराते रहे। हरियाली को चारों तरफ बिखेरते रहे नए मानव के लिए। अतः कवि मानव जगत को प्रकृति के अनुपम भण्डार को सहेज कर रखने के लिए कह रहे है।

अभ्यास

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो:-

(क) फूल नए फूलों के लिए क्या करने के लिए तत्पर हो?

उत्तर- फूल नए फूलों को ओस की बूंदे, सूरज की किरणें तथा रंग-बिरंगे रूप देना चाहते हैं। जिससे वे खिले, लहराये और चारों दिशाओं को महकाते रहे।

(ख) गंध किसके लिए मर मिटने को तैयार हो?

उत्तर- गंध नई गंध (महक) के लिए मर मिटने को तैयार हो।

(ग) कविता में बादल को क्या हक दिए जाने की बात की है?

उत्तर- कविता में बादल को छोटे पौधों को प्यार करने, छाया देने, प्रकृति में इन्द्रधनुष के रंगों को भरने, फिर जहाँ मन करे वहाँ जाए गरजे, बरसे आदि हक देने की बात कर रहे हैं।

घ डगर (रास्ते) कहाँ - कहाँ जाते हुए नए मार्ग बनाए?

उत्तर- डगर वन, पर्वत, खेत, गली - गाँव - चौराहे जाते हुए नए मार्ग बनाए।

ङ. कवि मिट्टी की हार क्यों नही चाहते? यदि हारे तो नए मानव को क्या उपहार दे?

उत्तर कवि मिट्टी की हार इसलिए नही चाहते क्योंकि धरती के अस्तित्व में ही मानव जाति का विकास है। धरती के गुणों को सहेज कर रखने में ही हमारी भलाई है। यदि हारे तब भी सम्पूर्ण प्रकृति मानव के कल्याण के लिए पताका स्वरूप बनी रहे। बस यही उपहार मानव के लिए प्रेरणा का रूप है।

व्याकरण

प्र। नीचे कुछ शब्द दिए जा रहे हैं उनके दो - दो पर्यायवाची शब्द ढूँढकर लिखिए :—

क पुष्प - सुमन कुसुम (फूल)

ख किनारा - छोर तीर (तट)

Teacher's Signature : _____

Date .....

Expt. No. ..... Page No. 5

ग मिट्टी - जमीन मृदा (माटी)

घ वायु - पवन समीर (हवा)

ङ मनुष्य - मनुज मानुष (मानव)

च ध्वज - निशान झंडा (पताका)

प्र.2 निम्नलिखित शब्दों के वर्ण - विच्छेद कीजिए।

क काँपे - क् + आँ + प् + ए

ख छाँह - छ् + आँ + ह् + अ

ग बाँह - ब् + आँ + ह् + ए

घ गाँव - ग् + आँ + व् + अ

ङ उज्ज्वल - उ + ज् + ज् + व् + अ + ल् + अ

च प्रार्थना - प् + र् + आ + र् + थ् + अ + न् + आ

छ राष्ट्रीय - र् + आ + ष् + ट् + र् + ई + य् + अ

ज मृणाल - म् + ऋ + ण् + आ + ल् + अ

झ क्रम - क् + र् + अ + म् + अ

Teacher's Signature : _____

प्र.3 नीचे दिए शब्दों के वचन बदलिए तथा लिंग भी लिखो।

शब्द	वचन	लिंग
हवा	हवा	स्त्रीलिंग
बादल	बादल	पुल्लिंग
रेशा	रेशें	पुल्लिंग
पत्ती	पत्तियाँ	स्त्रीलिंग
लहर	लहरें	स्त्रीलिंग

(रफ कॉपी में करे)

प्र.1 कोई एक कीजिए।

(क) कभी-कभी हमारी स्वतन्त्रता तथा अधिकार दूसरों के लिए बाधा या मुसीबत बन जाते हैं। ऐसा कब होता है? लिखो:-

ख प्रकृति को उसका पर्याप्त अधिकार मिले, उससे छेड़-छाड़ न हो। ऐसा कैसे संभव होगा? अपने विचार लिखो:-

(हँसते-गाते) ☺

संकेतों के आधार पर नाम पहचानक लिखो।

क जो हवा में उड़ता है। हवाई जहाज
ख जो जल बरसाता है। _____
ग जो सुगंध देता है। _____
घ जो गरमी देती है। _____
ङ. जो छाँह देता है। _____
च -जिस पर लोग चलते है। _____

Teacher's Signature : _____

Class- 8

क:

PAGE NO.
DATE / /

पाठ - 2

सार

सारांश पढ़े

यह कहानी दो मित्रों की है जो हिन्दुस्तान से अफ्रीका करोबार करने गए थे। एक मित्र बहुत बीमार हो गया तो उसने नैरोबी के एक अस्पताल से अपनी पत्नी को पत्र लिखा। मैं बहुत बीमार हूँ। रोग काबू से बहार है इसलिए डॉ. ने ऑपरेशन की सलाह दी है। लगता है मैं कुछ दिनों का मेहमान हूँ पता नही मेरे जाने के बाद तुम लोगों का क्या होगा।

उसके बाद कई दिनों तक कोई पत्र नही आया। पत्नी का स्वास्थ्य भी कुछ ठीक नही था। बच्चे जिनका नाम तनु और अज्जू था। माँ को रोता हुआ देखकर दुखी होते। फिर एक दिन अचानक पत्र आया उसमे लिखा था। मेरी हालत सुधर रही है। परमात्मा ने नया जन्म दिया है।

थोड़े दिनों बाद फिर पत्र आया उसमे लिखा था। मेरी हालत पहले से भी अच्छी है। इस बार पत्र के साथ कुछ रुपये भी भेजे। परिवार में खुशी की लहर छा गई। पत्नी का स्वास्थ्य भी ठीक होने लगा। इस तरह पत्र और पैसे नियमित रूप से पहुँचते रहे। इस बार फिर पत्र आया घर, बच्चे, पत्नी

ख

बच्चे, पत्नी सभी के बारे में कितने ही प्रश्न थे। बड़ी उत्साहजनक बातें थी। ऐसा पत्र पहले कभी नहीं आया।

इस तरह तीन बरस बीत गए। पत्रों के द्वारा ही सबकी खबर लेते, बच्चे भी पत्र में जो कुछ लिखा रहता उसका अक्षरशः पालन करते।

अन्नू अब बारह साल का हो गया तथा तनु अटठारह पार कर रही है। फिर चिट्ठी में लिखा तनु के लिए वर खोजे में अगले साल तनु के ब्याह पर अवश्य पहुँचूंगा। दहेज की चिंता मत करना। तनू के लिए वर खोजने में कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि तनु के पिता अफ्रीका में हैं और अधिक पैसा कमाते होंगे। इसी वजह से उसे अच्छा वर और घर-परिवार मिल गया। अब तनु की शादी का समय भी आ गया लेकिन फिर चिट्ठी में अपनी विवशता बताते हुए कहा कि मैं शादी में नहीं आ सकता एक नया कारोबार शुरू किया है।

उसमें मजदूरों की हड़ताल चल रही है। इस समय सब छोड़कर नहीं आ

सकता हूँ पैसे, गहने, कपड़े भिजवा दिए हैं वर - वधु का चित्र भेजना। इस तरह शादी भी हो गई। अज्जू पढ़ाई में बहुत होशियार था। हमेशा प्रथम स्थान प्राप्त करता था।

इस बार मर्मस्पर्शी पत्र के साथ कैमरा, घड़ी और सूट भी आया था। पर हर बार आने का वादा करते और कोई न कोई अड़चन आ जाती जिसके कारण उनका आना स्थगित हो जाता। इस प्रकार समय पंख लगाकर उड़ने लगा।

बच्चों ने लिखा अगर आप नहीं आ रहे तो हम ही अफ्रीका आ जाते हैं। इस पर उत्तर में जवाब आया। ~~अच्छा~~ अज्जू तुम्हें अपनी पढ़ाई पूरी करना है। समय मिलेगा तो मैं ही आ जाऊँगा। मुझे भी तो तुम सब की याद आती है।

अंत में वह दिन भी आया जब अज्जू ने अपनी पढ़ाई पूरी कर ली। पिता के आने की कोई सम्भावना नहीं दिखी तो उसने जाने के लिए टिकट, पासपोर्ट, वीजा सब तैयार कर दिल्ली से विमान में बैठकर रवाना हो गया। और सोचने लगा पिता मुझे देखकर चकित हो जाएँगे।

घ -

नैरोबी के हवाई अड्डे पर उतरकर उसी पते पर गया जहाँ से पत्र आते थे। वहा ताला लगा था। किसी से पुछने पर पता चला वहा एक भारतीय वृद्ध रहता है जो रात में आता है अज्जू उनकी राह देख रहा था। तभी वृद्ध आये और ताला खोलते ही उन्होने अज्जू को देखा और नाम पता पुछते ही उसे गले से लगा लिया। बड़े उत्साह से स्वागत किया, भोजन करवाया। फिर उन्होने अज्जू को उसके पिता के बारे मे बताया कि मैं तुम्हारे पिता का जिगरी दोस्त हुँ। हमने हिस्सेदारी में कारोबार चालू किया था।

मैं ही तुम्हारे पिता की ओर से पत्र भेजा करता था। अज्जू तुम्हारे पिता जी तो उसी समय गुजर गए थे।

अज्जू का हाथ अपने हाथ में लेकर कहने लगें - "देखो बेटे तिनको के सहारे तो हर कोई जी लेता है। लेकिन कभी-कभी हम तिनको के साए मात्र के आसरे भवर से निकल किनारे पर आ जाते है। तुम्हारे पिता जिंदा है' इस भ्रम में ही तुम सब अपनी-अपनी जिंदगी में खुश रहकर आगे बड़े नही तो तुम अपने आप को अनाथ समझते और तुम्हारी माँ तो घुट-घुटकर मर जाती

classmate
Date
Page

ङ.

आगे पिता के मित्र कहते हैं - " हम दुर्बल होते हुए भी अकेले बिना किसी सहारे बड़ी से बड़ी समस्या का भी हल कर जाते हैं बस एक अदृश्य डोर के सहारे"।

मैंने उनसे वादा किया था कि उनके हिस्से के पैसे भेजूँगा और तुम्हारी सभी जरूरतों को पूरा करूँगा। अब तुम बड़े हो गए हो अपने इस कारोबार में मेरा हाथ बटाओ।

मेरा वचन पूरा हुआ जो मैंने तुम्हारे पिता को मरते समय दिया था।

Class - 8 Sub - Hindi

पाठ - 2

साए

शब्दार्थ

रुग्ण - बीमार

सुदूर - बहुत दूर

परवरिश - पालन - पोषण

अक्षरश: - जैसा लिखा हो बिलकुल

अव्वल - प्रथम

सहज - आराम से

हाई स्कूल - दसवीं कक्षा

मर्मस्पर्शी - दिल को छू लेने वाली

स्थगित - कुछ समय के लिए रुका हुआ

अबाध - बिना रुके

प्रत्युत्तर - जवाब में

अकस्मात - अचानक

उत्कंठा - उत्सुकता

अप्रवासी - भारत के बाहर रहने वाले भारतीय

साझे में - हिस्सेदारी में

बदौलत - के कारण

अभ्यास

प्र. 1 कहानी के अनुसार सही शब्द चुनकर रिक्त स्थान भरिए।

(क) पिता चिट्ठी में जो हिदायतें लिखते, बच्चे उनका अक्षरशः पालन करते।
[पढ़कर / अक्षरशः]

(ख) पिता को हर बार कुछ न कुछ अड़चनें आ जातीं और उनका आना स्थगित हो जाता। [स्थगित / असंभव]

(ग) कभी-कभी हम तिनकों के साए मात्र के आसरे भँवर से निकलकर किनारे पर आ लगते हैं।
[सहारे से / साए मात्र के आसरे]

प्र. 2 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :-

(क) नियमित रूप से चिट्ठियाँ और रुपये आने का परिवार पर क्या असर हुआ?

उत्तर- नियमित रूप से चिट्ठियों के आने और पिता के स्वास्थ्य की अच्छी

खबरें मिलने से परिवार में खुशी की लहर छा गई। रुपयों से घर के खर्चों को चलाने में मदद मिलती गई। मुरझाए बच्चों के चहरे फिर खिल उठे। पत्नी का स्वास्थ्य भी सुधरने लगा।

(ख) तनु के लिए अच्छे घराने का वर सहज ही मिलने के पीछे क्या कारण था?

उत्तर- तनु के पिता अफ्रीका में हैं और अच्छे पैसे कमाते होंगे। इस भ्रम में तनु के लिए अच्छा वर और खाता-पीता घर आसानी से मिल गया

(ग) परिवार द्वारा अफ्रीका आकर मिलने की बात का चिट्ठी द्वारा क्या जवाब आया?

उत्तर उत्तर में जवाब आया कि अन्नू तुम अपनी पढ़ाई पूरी करके ही यहाँ आना। समय निकालकर मैं स्वयं ही आने का प्रयास करूंगा मुझे भी बच्चों और घर की बहुत याद आती है लेकिन मजबूरी के आगे कुछ नहीं कर सकते।

(घ) पिता ने तनु की शादी में न पहुँचने की क्या विवशता बताई?

उत्तर- पिता अपनी विवशता बताते हुए कहते हैं एक नया कारोबार शुरू किया है. उसमें मजदूरों की हड़ताल चल रही है। ऐसे संकट के समय में यह सब छोड़कर मैं नही आ सकता।

(ङ) अज्जू ने नैरोबी जाने का कार्यक्रम क्यों बनाया?

उत्तर अज्जू की पढ़ाई पूरी हो चुकी थी। अब वह नौकरी की तलाश कर रहा था। लेकिन पिता के के बार-बार आने का कहना और नही आना, इस बात से चिंतित अज्जू ने अचानक नैरोबी जाने का फैसला किया। वह सोचने लगा पिताजी मुझे देखकर कितने आश्चर्यचकित होंगे।

(च) पिता के मित्र ने परिवार को उनकी मृत्यु का समाचार न देकर स्वयं उनके सारे कर्तव्य निभाए। आपकी दृष्टी से क्या ये उचित था?

उत्तर हमारी दृष्टी से यह उचित था क्योंकि

परिवार को पता चलता कि अज्जू के पिताजी की मृत्यु हो चुकी है तो वे जीना ही छोड़ देते। बच्चे अपने आप को अनाथ समझते। माँ का स्वास्थ्य और बिगड़ जाता। पिता की मृत्यु का पता न होने के कारण और नियमित पत्र आने, रुपये भेजने से वे खुश थे।

पैसों से उनकी जरूरतें पूरी हो रही थी। इसलिए बच्चें भी अपनी पढ़ाई अच्छे से कर रहे थे। माँ का स्वास्थ्य भी सुधर रहा था। पिता के अफ्रीका में होने की खबर से ही तनु को अच्छा घर-परिवार मिल गया। पिता के दोस्त ने अपनी मित्रता का फर्ज निभाया।

प्र: 2 निम्नलिखित कथनों का अपने शब्दों में आशय स्पष्ट कीजिए।

(क) समय अबाध गति से पंख बाँधकर उड़ता रहा।

उत्तर → समय हम सभी के लिए अमूल्य है। समय इस संसार में सभी से बहुत ही ताकतवर और शक्तिशाली है। यह एक आलसी व्यक्ति को नष्ट कर देता है और कठिन परिश्रम

7

करने वाले को ताकत देता है।
समय बिना किसी रुकावट के चलते रहता है जीवन में सुख हो या दुःख यह किसी के लिए रुकता नही है।
समय के मूल्य को समझना चाहिए और इसके साथ चलना चाहिए

(2) हम दुर्बल होते हुए, असहाय, अकेले होते हुए भी कितने - कितने बीहड़ वनों को पार कर जाते हैं, सहारे की एक अदृश्य डोर के सहारे .....

उत्तर लेखक श्री हिमांशु जोशी कहते है कि हम कमजोर, अकेले होते हुए भी बिना किसी सहारे के, विकट परिस्थितियों मे भी कठिन से कठिन कार्य बिना किसी रुकावट के कर जाते है।
जिस प्रकार एक मित्र ने अपने मित्र की मृत्यू होने पर भी अपनी मित्रता निभाई और उसके नाम के सहारे ही उसके परिवार का पालन - पोषण करता रहा। जैसे कोई अदृश्य डोर उसके हाथ में थी।

व्याकरण

① आगत स्वर - हिन्दी भाषा में विदेशी विदेशी भाषाओं के अनेक शब्द प्रचलन मे आ गए हैं। 'ऑ' स्वर का उच्चारण 'आ' और 'ओ' के बीच का प्रतीत होता है यह आगत स्वर है।

कुछ आगत शब्द लिखिए।
(1) ऑपरेशन (2) डॉक्टर (3) बॉल (4) कॉफी

② 'जनक' शब्द 'पिता' शब्द का पर्याय है। इसका अर्थ होता है-'पैदा करने वाला' जनक शब्द अन्य कई शब्दों में भी प्रयोग किया जाता है;
जैसे - सम्मानजनक - जिससे मिलने पर मन में सम्मान का भाव पैदा हो

① उत्साहजनक - उत्साह उत्पन्न करने वाला

② निराशाजनक - निराशा उत्पन्न करने वाला

③ आश्चर्यजनक - विस्मय उत्पन्न करने वाला

③ क्रिया विशेषण -
क्रिया की विशेषता बताने वाले शब्द क्रिया विशेषण कहलाते हैं।
क्रिया विशेषण के चार भेद हैं।

① रीतिवाचक क्रियाविशेषण -
क्रिया के होने या करने की रीति का बोध कराने वाले शब्द रीतिवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

② कालवाचक क्रियाविशेषण -
क्रिया के होने या करने के समय का बोध कराने वाले शब्द कालवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

③ स्थानवाचक क्रिया विशेषण -
क्रिया के होने या करने के स्थान का बोध कराने वाले शब्द स्थानवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।

④ परिमाणवाचक क्रियाविशेषण -
क्रिया के परिमाण का बोध कराने वाले शब्द परिमाणवाचक क्रियाविशेषण कहलाते हैं।